उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि इंग्लैण्ड की अपेक्षा पुर्तगाल की दोनों वस्तुओं के उत्पादन में अधिक लाभ प्राप्त होता है। लेकिन अन्य तुलनात्मक लाभ शराब के उत्पादन की अपेक्षा कपड़े के उत्पादन में कम है। इसी प्रकार इंग्लैण्ड को पुर्तगाल की तुलना में दोनों ही वस्तुओं के उत्पादन में अधिक तुलनात्मक हानि है। लेकिन उसकी तुलनात्मक हानि शराब के उत्पादन की अपेक्षा कपड़े के उत्पादन में कम है। अतः दोनों देशों के हित में यह अच्छा होगा कि प्रत्येक देश किसी खास ही वस्तु के उत्पादन में विशिष्टीकरण प्राप्त करे। यदि इंग्लैण्ड की कपड़े के उत्पादन में और पुर्तगाल का शराब के उत्पादन में विशिष्टीकरण प्राप्त करने से दोनों ही की तुलनात्मक हानि कम होगी। इस प्रकार यदि इंग्लैण्ड कपड़े का उत्पादन करे और पुर्तगाल शराब का तो 100 दिनों के श्रम के बदले उसे शराब की उतनी ही मात्रा प्राप्त हो जाएगी जितना उत्पादन करने में 120 दिनों का श्रम लगता है। इसी तरह पुर्तगाल शराब का उत्पादन करे और उसके बदले में इंग्लैण्ड से कपड़ा मँगाए तो 80 दिन के श्रम के बदले उसे कपड़े की उतनी ही मात्रा प्राप्त हो जाएगी जितना उत्पादन करने में उसे 90 दिन का श्रम लगता है।

Ricardo का यह सिद्धान्त उसके अन्य सिद्धान्त के समान ही कुछ मान्यताओं पर आधारित है। वे मान्यताएँ निम्नलिखित हैं:—

(i) श्रम ही केवल उत्पत्ति का साधन है और उत्पादन लागत में केवल श्रम लागत आता है अर्थात् यह सिद्धान्त मूल्य के श्रम सिद्धान्त की मान्यता पर आधारित है।
(ii) श्रम की सभी इकाइयों में समरूपता होती है
(iii) उत्पादन में सिर्फ उत्पत्ति समता नियम लागू होता है
(iv) यह सिद्धान्त केवल दो ही वस्तुओं के दो देशों के बीच व्यापार को ध्यान में रखकर चलता है
(v) उत्पादन के साधन देश के भीतर पूर्णतः गतिशील होते हैं लेकिन विभिन्न देशों के बीच पूर्णतः अगतिशील होते हैं।

Caines, Bastable, Taussing and Haberler आदि मुख्य हैं।

तुलनात्मक लागत सिद्धान्त का आधार यह है कि कोई भी देश उन्हीं वस्तुओं का उत्पादन और निर्यात करता है जिनके उत्पादन में उनके तुलनात्मक लागत का लाभ अपेक्षाकृत अधिक होता है। इसी तरह उन्हीं वस्तुओं का आयात करता है, जिनके उत्पादन में उसके तुलनात्मक लागत का लाभ अपेक्षाकृत कम होता है अथवा उसे तुलनात्मक हानि होती है। Ricardo ने स्पष्ट किया है कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में लागू होने वाले तुलनात्मक लागत के सिद्धान्त का मतलब यह होता है कि प्रत्येक देश उन वस्तुओं के उत्पादन करने से आवश्यकता रूप से चेष्टा नहीं करती है जिन्हें वह अन्य देशों की अपेक्षा कम लागत पर उत्पादित कर सकता है/वरन् वह उन वस्तुओं को उत्पादित करने की चेष्टा करता है, जिन्हें वह सर्वाधिक सापेक्षिक लाभ अथवा न्यूनतम तुलनात्मक लागत पर उत्पादित कर सकता है। उन्होंने अपनी पुस्तक — "Principle of Political Economy & Taxation" में निम्न शब्दों में कहा है कि

"The theory of comparative cost as applied to international trade is that a country tends to produce not necessarily what it can produce more cheaply than another country but those articles which it can produce at the greatest relative advantages that is at the lowest comparative cost."

अपने सिद्धान्त की व्याख्या करते हुए Ricardo ने निम्नलिखित प्रसिद्ध उदाहरण दिया।

देश	इकाईयाँ	कपड़ा	शराब
England	10	100 दिन	120 दिन
Purtgal	10	90 दिन	80 दिन

Ques. Critically explain theory of Comparative Cost ?

or Critically examine classical theory of International trade ?

Answer ⇒ मानवीय सभ्यता संस्कृति और आर्थिक विकास के इतिहास में वैज्ञानिक आविष्कार और तकनीकी विकास के साथ ही साथ मनुष्य का आर्थिक क्रिया-कलाप देश की सीमा के आर-पार होने लगी। जब दो या दो से अधिक देशों के बीच वस्तुओं का क्रय-विक्रय होता है। उसे हम अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार कहते हैं। प्राचीन काल से ही ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का उल्लेख मिलता है। मिस्र देश की ममियाँ ढाका के मलमल में लिपटी पायी गयी है। प्राचीन मिस्र देश की सभ्यता, चीन की सभ्यता, रोम की सभ्यता के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उस जमाने में भी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार होते थे।

अब प्रश्न उठता है कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का सिद्धान्त क्या है ? किन परिस्थितियों में तथा किन शर्तों पर दो देशों के बीच अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार होते हैं ? इन प्रश्नों [illegible] उत्तर वाणिज्यवादियों के काल से ही अर्थशास्त्रियों ने खोजने का प्रयास [illegible] उन्होंने इसका उत्तर "more trade more gold" [illegible] नारे के रूप में दिया। किन्तु यह कोई वैज्ञानिक [illegible] नहीं था। उस प्रश्न का वैज्ञानिक विश्लेषण सर्व [illegible] शास्त्रीय अर्थशास्त्रियों ने दिया। इसलिए इस सिद्धान्त [illegible] अन्त-र्राष्ट्रीय व्यापार का शास्त्रीय सिद्धान्त अथवा [illegible] और [illegible] परम्परावादी सिद्धान्त कहा जाता है। इसका प्रतिपादन [illegible] प्रथम Ricardo ने किया। इसलिए इसे Ricardo का सिद्धान्त भी कहा जाता। [illegible] सिद्धान्त मानता है कि दो देशों के बीच अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार उनके तुलनात्मक लागत के आधार पर होता है। इसलिए इसे तुलनात्मक लागत का सिद्धान्त भी कहा जाता है। [illegible] Ricardo के बाद तुलनात्मक लागत सिद्धान्त में कई ~~[illegible]~~ संशोधन एवं परिवर्तन अर्थशास्त्रियों ने आवश्यक परिवर्तन किया है। जैसे अर्थशास्त्रियों में [illegible] J.S. Mill